अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) अयोगी में कर्मों की नियमा भजना होती है-

(क) 8 की भजना (ख) 7 की नियमा आयु का अबंध

(ग) 8 की नियमा (घ) 8 का अबंध ( )

(b) परीत में कर्मों की नियमा भजना है-

(क) 8 की भजना (ख) 7 की नियमा आयु की भजना

(ग) 8 का अबंध (घ) वेदनीय की भजना 7 का अबंध ( )

(c) सम्पूर्ण जीव राशि है -

(क) अनन्त (ख) असंख्यात

(ग) संख्यात (घ) अनन्तानंत ( )

(d) आयु के बंधक से आयु के अबंधक कितने गुणा है-

(क) अनन्त (ख) असंख्यात

(ग) संख्यात (घ) विशेषाधिक ( )

(e) नोसंज्ञा बहुता में गुणस्थान है-

(क) 7 से 14 तक (ख) 6 से 14 तक

(ग) 5 से 12 तक (घ) 7 से 12 तक ( )

(f) 47 बोल में योग मार्गणा के बोल हैं-

(क) 3 (ख) 4

(ग) 5 (घ) 6 ( )

(g) एक बेइन्द्रिय दूसरे बेइन्द्रिय से स्थिति की अपेक्षा है-

(क) एकस्थानपतित (ख) द्विस्थानपतित

(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुस्थानपतित ( )

(h) एक वैमानिक देव दूसरे वैमानिक देव से अवगाहना की अपेक्षा है-

(क)एकस्थानपतित (ख)द्विस्थानपतित

(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुस्थानपतित ( )

(i) अरूपी अजीव की पर्याय के भेद हैं-

(क) 02 (ख) 03

(ग) 05 (घ) 10 ( )

(j) एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, दूसरे संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से अवगाहना की अपेक्षा है-

(क) चतुस्थानपतित (ख) तुल्य

(ग) त्रिस्थानपतित (घ) द्विस्थानपतित ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) शुक्ल लेशी जीव अभवी भी हो सकता है। ( )

(b) मिश्र दृष्टि अवस्था में आयुष्य का बंध नहीं होता है। ( )

(c) जीव पर्याय के थोकड़े में उपयोग की अपेक्षा चक्षुदर्शन उत्पत्ति के प्रथम समय में माना है। ( )

(d) पाँच स्थावर की स्थिति असंख्यात काल की होती है। ( )

(e) सभी परमाणु अप्रदेशी होते हैं। ( )

(f) जो-जो पुद्गल एक आकाश प्रदेश पर स्थित रह जाते हैं, उन्हें एक प्रदेशावगाढ़ कहते हैं। ( )

(g) बाटा बहते जीव में वेदनीय समुद्घात हो सकती है। ( )

(h) साकार उपयोग वाले से नोइन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा है। ( )

(i) अपर्याप्त में सात कर्मों की नियमा व आयु का अबंध होता है। ( )

(j) नोपरीत नो अपरीत में 8 कर्मों की भजना होती है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	मिश्र दृष्टि नारकी	(क) तीसरा भंग	.....
(b)	कृष्ण पक्षी वाणव्यन्तर	(ख) दूसरा, तीसरा, चौथा भंग	.....
(c)	श्रुतज्ञानी तेइन्द्रिय	(ग) चौथा भंग	.....
(d)	अलेशी मनुष्य	(घ) 16 राशि	.....
(e)	मति ज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(च) चारों भंग	.....
(f)	कृष्ण लेशी पृथ्वीकाय	(छ) पहला, तीसरा भंग	.....
(g)	सकषायी सर्वार्थ सिद्ध	(ज) 8 राशि	.....
(h)	साता वेदनीय भोगने वाले	(झ) तीसरा, चौथा भंग	.....
(i)	समुद्घात करने वाले	(य) 64 राशि	.....
(j)	अनाकार उपयोग वाले	(र) पहला, तीसरा, चौथा भंग	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) **मैं 1 से 13 गुणस्थान तक निरन्तर बंधता हूँ।** .....

(b) **मेरे पाँच भागों में पहला सवेदी व शेष चार अवेदी हैं।** .....

(c) **मेरा बंध अनाहारक अवस्था में नहीं होता है।** .....

(d) **मुझमें एक समय में एक ही वर्ण, एक ही गंध, एक ही रस तथा दो स्पर्श होते हैं।** .....

(e) **मुझमें मिलने व बिखरने का गुण होता है।** .....

(f) **मेरी यह विशेषता है कि सूक्ष्म भाव में परिणत होने से मैं कम से कम एक आकाश प्रदेश पर भी ठहर सकता हूँ।** .....

(g) **उत्कृष्ट अवधि ज्ञान होने पर अन्तर्मुहूर्त्त में मेरी प्राप्ति की नियमा है।** .....

(h) **पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्कृष्ट स्थिति मेरी अपेक्षा है** .....

(i) **मेरा अनन्त संसार बाकी है, इसलिए चौथा भंग आयु कर्म आश्री नहीं होता है।**.....

(j) **तीन दृष्टियों में से मैं संज्ञी पंचेन्द्रिय में ही पायी जाने वाली दृष्टि हूँ।** .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। **9x2 = (18)**

(a) **14वें गुणस्थान में प्रथम समय में सलेशीपन मानने का कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

(b) **चरम शरीरी में ही पायी जाने वाले तीन बोल लिखिए।**

.....

.....

.....

(c) **एक अप्काय की दूसरे अप्काय से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

(d) **जघन्य श्रुतज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य श्रुतज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

(e) **जघन्य चक्षुदर्शन वाले मनुष्य की जघन्य चक्षुदर्शन वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

(f) **केवल ज्ञानी मनुष्य की केवलज्ञानी मनुष्य से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

(g) **एक द्विप्रदेशी स्कन्ध की दूसरे द्विप्रदेशी स्कन्ध से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

(h) **एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल की एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

(i) **50 बोल की बंधी से भाषक-अभाषक में कर्मों की नियमा भजना लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई-8) **8x4=(32)**

(a) **मन पर्यव ज्ञानी में आयुष्य कर्म आश्री भंग लिखकर कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **सज्ञानी चौरेन्द्रिय में आयुष्य कर्म आश्री भंग लिखकर कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उपयोग कितने होते हैं ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **उत्कृष्ट अवगाहना वाले नारकी की आपस में तुलना करते हुए उनमें पाये जाने वाले स्थान को स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **संख्यात गुण हीन-अधिक व असंख्यात भाग हीन-अधिक को परिभाषित करते हुए समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **अजीव पर्याय के थोकड़े का समुच्चय काल द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की तुलना संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **पचास बोल की बंधी का आहारक व चरम द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **जीव पर्याय के थोकड़े से चक्षुदर्शन सम्बन्धी अपेक्षा को स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....